जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
मूल्य : 10 रुपये
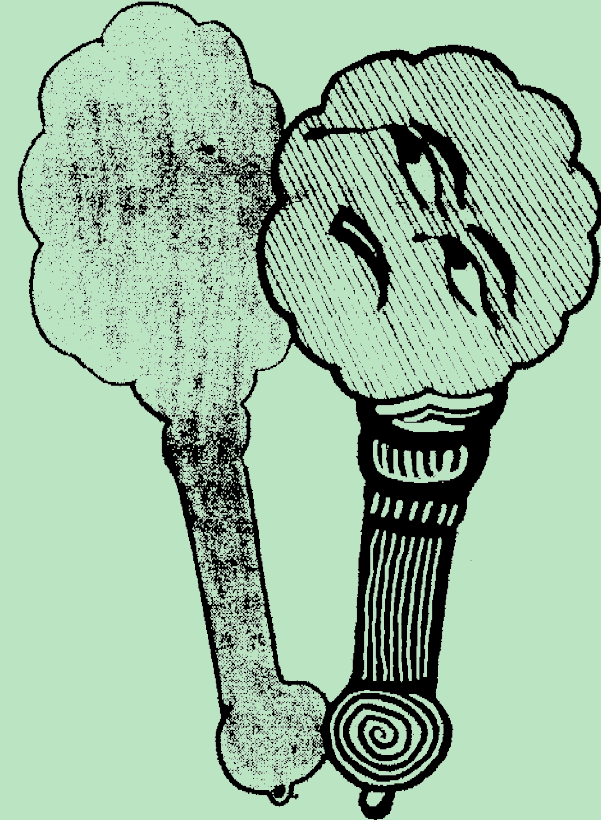
# झुनझुना

नरेश पंडित

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

झुनझुना : नरेश पंडित
*Jhunjhuna : Naresh Pandit*
*Prepared by Himachal Gyan Vigyan Samithi*

**नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित**


पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
*Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar*
*Executive Editor : Sanjay Kumar*

रेखांकन : सुधीर
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1999, 2003

*इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।*

**मूल्य: 10 रुपये**

*Published by* ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****, Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,* **email: bgvs@vsnl.net**

# झुनझुना

## नरेश पंडित

*(यह किताब भारत ज्ञान विज्ञान समिति की हिमाचल प्रदेश शाखा द्वारा तैयार की गई है)।*

# झुनझुना

छुनकी झुनझुना बजा रही है। यह कचहरी उसके लिए अपने गाँव में लगे मेले की तरह है। यह झुनझुना इसे बापू ने दिया है। इसकी अम्मा रेवती और बापू धिनायक सिंह हवलदार का आज तलाक का मुकदमा है।

''सरकार बनाम रेवती......हाजिर हो.....।''

अरदली ने आवाज दी। रेवती कोर्ट में जाने को खड़ी हुई। नहीं, यह बुलावा उसके लिए नहीं था। उसके नाम के आगे उसके पति का नाम भी पुकारा जाएगा।

''धिनायक सिंह बनाम रेवती।''

अपने खसम के साथ उसे अपना नाम सुनना अच्छा लगता है। भगवान भला करे इस अरदली का, जो इन दोनों को जोड़ता है। बाकी सब तो इन्हें अलग करवाने में लगे हैं।

आज यह छुनकी कितनी खुश है। फौजी के इर्द-गिर्द चक्कर



लगा रही है। सारी की सारी अपने बाप पर गई है। वहीं चुलबुली आँखें, माथा और साँवला घुटा हुआ रंग। लगता है फौजी का दिमाग भी कुछ नर्म पड़ गया है, तभी तो अपनी बेटी के लिए उसने इतना बढ़िया झुनझुना खरीदा है।

ये गर्मियों के दिन भी बहुत लंबे होते हैं। उबासी भरे, आलसी दिन। अगर कचहरी में इन दिनों अपनी पेशी का इंतजार करना पड़े तो और भी उकताहट होती है। गाँव की कामकाजी औरत, जिसके लिए एक घड़ी की भी फुर्सत न हो, उसके लिए तो सारा दिन बैठे-बैठे इंतजार करना मौत है। रेवती हर मौसम में कचहरी पहुँची है। बरसात में भींगती। सर्दियों में ठिठुरती। आज इस चिलचिलाती धूप में पसीने से तर हो आई है।

कचहरी के आँगन का बेंच, उसका जाना-पहचाना हो गया है। एक कोने में सिकुड़ी बैठी है। वह सामने की हर गतिविधि को देखती रहती है। पुलिसियों और वकीलों के चंगुल में फँसे

लोगों को देखती रहती है। काले कोट पहने वकील, रेवती को मरे जानवर पर मँडराते कौवों की तरह लगते हैं।

उसकी माँ तो, इस मनहूस कचहरी में आने से पहले ही रोक रही थी। हमेशा बोलती रही कि अपनी जात–बिरादरी में ही फैसला करवा लो। यह फौजी कहाँ मानने वाला था। उसे इस फौजी के लक्षण शुरू से ही ठीक नहीं लगते थे। परन्तु बापू को बड़ा कमाऊ पूत लगता था। फौज की नौकरी करके सिमेंट का



पक्का घर बना दिया था। रेवती से शादी करने के बाद इस कमाऊ पूत ने एक बार भी उसे रुपये का मुँह न दिखाया। अपने आप फौज चला गया। उसे पीछे सड़ने के लिए छोड़ गया।

''अम्मा ...... अम्मा ...... मम ...... पानी'' कहती हुई छुनकी दौड़कर माँ की गोद में आ गई। रेवती उसे सामने चाय वाले के पास ले गई। सुबह आती बार छुनकी की नानी ने दुपट्टे में रोटी बाँध दी थी। अब रोटी के टुकड़े–टुकड़े खिलाकर छुनकी का पेट भर रही है। अपने आप तो उसने जैसे व्रत ही मान लिया है।

रेवती को फौजी और मुंशी अपनी तरफ आते हुए सामने दिखाई दिए। लगता है, वह शायद राजीनामा करने आ रहे हैं। फौजी को अपने नजदीक आते देख उसने दुपट्टे का पल्लू सिर पर जरा आगे सरकाया। पास पहुँचते ही मुंशी मीठी जबान में उसे समझाने लगा।

''देख रेवती, तुम्हारा भला हवलदार की बात मानने में ही है। मुकदमे का बोझ तुझसे ढोया नहीं जा सकता। यह केस पता नहीं कितने साल चले। आज यह मामला खत्म कर दो। वकील साहब तुम्हारे लिए जज से खाने–पीने और कपड़े–लत्ते के लिए कुछ पैसे माहवार लगवा देंगे। इस हवलदार का कोई भरोसा नहीं, कब क्या कर बैठे।''

फौजी ने अपनी मूछों पर हाथ फेरा और धमकाते हुए बोला,

''ओए रेवती, फौजी की मार को तू जानती नहीं ? आज की पेशी में जज से अपने आप तलाक माँग ले। नहीं तो मैं तुम्हें आज
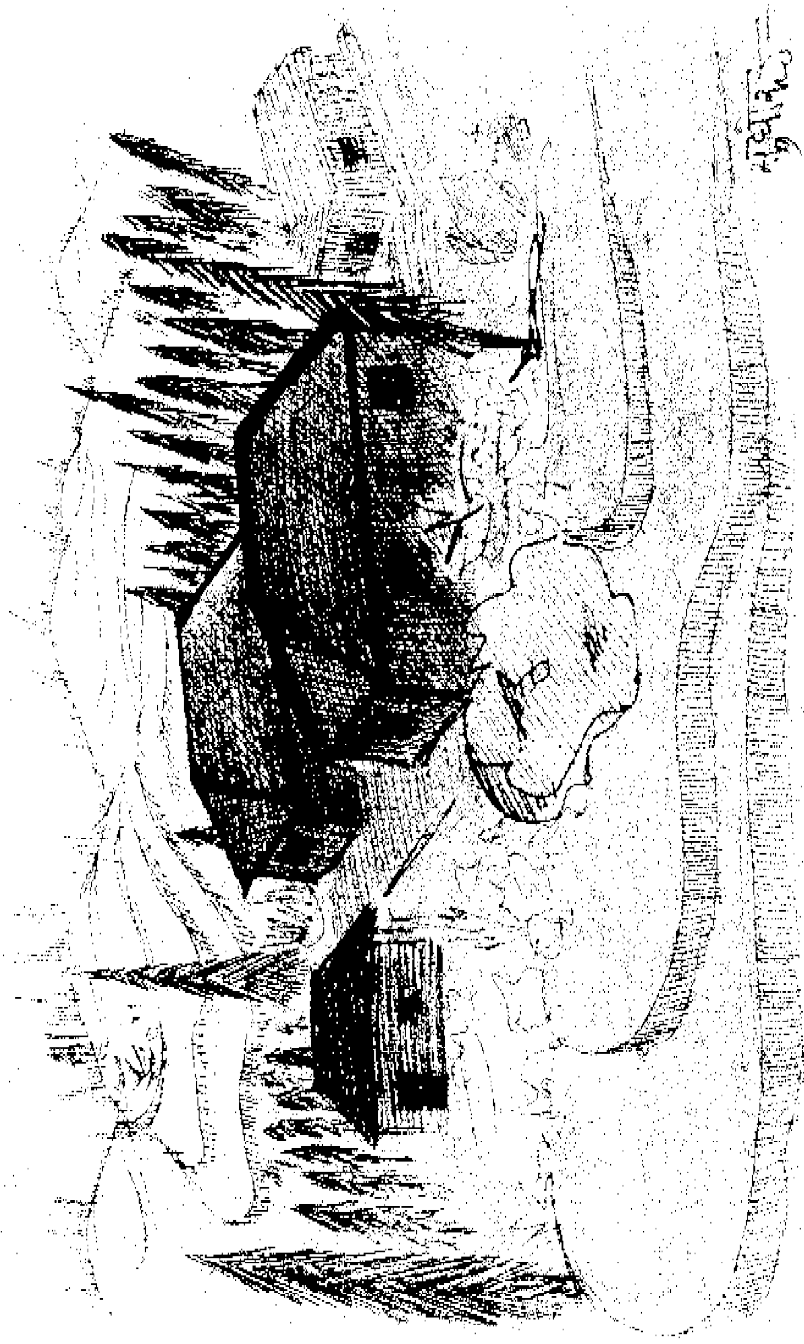
गाँव नहीं पहुँचने दूँगा। न तेरी इस बेटी को ....।''

इस बीच झुनझुना बजाती हुई छुनकी फौजी की टाँगों से लिपट पड़ी। रेवती कुछ संभली। उसने छुनकी को फौजी की टाँगों से छुड़ाया और भड़क उठी,

''मार ही क्यों न देते अपनी बेटी को.... और मुझे भी। मैंने तो कभी भी कचहरी के लिए नहीं बोला था। मुझे न तलाक देना है और न लेना है।''

रेवती पसीने से तर हो रही थी। उसका जिस्म हल्का-हल्का काँपने लगा। ताप बढ़ रहा था। वह अपने साथ छुनकी को घसीटती हुई कोर्ट के आँगन में पहुँची। बेंच पर खाली जगह टिक गई। दुपट्टे की गाँठ से रोटी का टुकड़ा निकाला और छुनकी के हाथों में दे दिया। उसे गोद में लेकर, दुपट्टे से हवा करने लगी।

उसे यकीन था कि आज वह अपने फौजी के साथ जरूर गाँव लौटेगी। सुबह से ही लग रहा था कि कचहरी का आज आखिरी फेरा है। नहीं, सब कुछ ठीक ही होगा, फौजी को तो रौब मारने की आदत है। इस तरह पता नहीं वह कितनी बार उसे गोलियों से भून चुका है। अब तो जैसा भी हो, यही उसका पति परमेश्वर है। ब्याह की अग्नि के सात फेरे लगाए हैं। यह कोर्ट, कचहरी, जज और वकील उसकी शादी का फैसला कैसे कर सकते हैं ?

दोपहर हो गयी है। रेवती का सिर सोचते-सोचते चकराने लगा। भूख से उसके पेट में जैसे आग जल रही है। गला सूख

गया। आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे एक झटका-सा लगा और वहीं बेंच से नीचे लुढ़क गई। छुनकी भी उसकी गोद में साथ गिर गई। उसके हाथ से झुनझुना छूट गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगी।



कचहरी का लंच टाईम हुआ है। लोग उसकी तरफ भाग रहे हैं। भीड़ ने उसे घेर लिया है। कोई पानी छिड़कने को बोल रहा है। कोई उसके पैरों पर मालिश करने को। छुनकी डरी-डरी रो रही है। उसका झुनझुना भीड़ ने कहीं कुचल दिया है।

इसी बीच जज साहब भी लंच के लिए कचहरी से बाहर निकले। वह इतना हजूम देखकर वहीं खड़े हो गए। उनके यहाँ खड़े होने की देर थी कि कई वकील उल्टे पैर लौट आए।

''सर! उधर उस औरत को चक्कर आ गया है। शायद कोई बीमारी हो। बेहोश हो गयी है। आज इसकी पेशी है।''

जज साहब ने वकील के कंधे पर हाथ रखा। सामने जीप के पास खड़े ड्राइवर को इशारा किया।

''वकील साहब, आप इस जीप पर इस औरत को हास्पीटल भिजवा दीजिए। मैं डाक्टर को फोन करता हूँ,'' वकील से बोले।

डाक्टर को जज का फोन आ चुका है। नर्सों ने रेवती को बेड पर लिटा दिया। छुनकी हैरानी से अपनी माँ को, रोते हुए देख रही है। थोड़ी देर के बाद रेवती ने आँखें खोलीं।

वह पूरे होश में अभी भी नहीं आई थी। उसे एक तरफ से नर्सों ने घेर रखा है। दूसरी तरफ से मुंशी ने पकड़ रखा है। पता नहीं, उसकी हड्डियों में इतनी जान कहाँ से आ गई। वह उठकर सीधी बैठ गई और जोर-जोर से चीखने लगी।

''मैं सुहागन हूँ, उनको जल्दी से बुलाओ। मेरा वक्त आ गया है। मैं ऐसे नहीं मरूँगी।''

नर्सें उसे दिलासा देने लगीं,

''लेटी रहो। तुम ठीक-ठाक हो। बस, हल्का-सा बेहोशी का दौरा पड़ा है।''

''न.....न, मैं तो जाने वाली हूँ। मेरे सुहाग को बुलाओ। जल्दी बुलाओ। उसके हाथ से आखिरी आचमन लूँगी। मेरा पति परमेश्वर ही मेरी चिता को आग देगा।''

छुनकी अम्मा-अम्मा चिल्लाती अपनी माँ के गले से लिपट गई। माँ ने उसे चूमा और फिर लुढ़क गई।

रेवती फिर बेहोश हो गई। इस बार वह काफी देर तक बेहोश रही। मुंशी वहाँ से खिसक गया। पास के बेड पर से किसी ने एक केला रोती हुई छुनकी को पकड़ाया। शाम तक रेवती इसी हालत में रही।

रेवती को इस तरह हास्पीटल तक पहुँचाना चर्चा का विषय बन गया था। मुंशी अपने वकीलों को और वकील जजों को जन सेवा में रुचि के किस्से बढ़ा-चढ़ाकर सुनाने लगे। धिनायक सिंह हवलदार को भी इस सारी घटना का पता लगा। पहले तो वह हास्पीटल जाने को तैयार न था। परन्तु अपने वकील और मुंशी के कहने पर वह रेवती को देखने पहुँच ही गया।

रेवती अपने बिस्तर पर आराम से छुनकी के साथ बैठी है। अब उसकी तबीयत बिल्कुल ठीक हो गई है। नर्सें छुनकी के लिए दूध लायीं। किसी महिला ने रेवती को भी खिचड़ी खिला दी है। वह खामोश है।
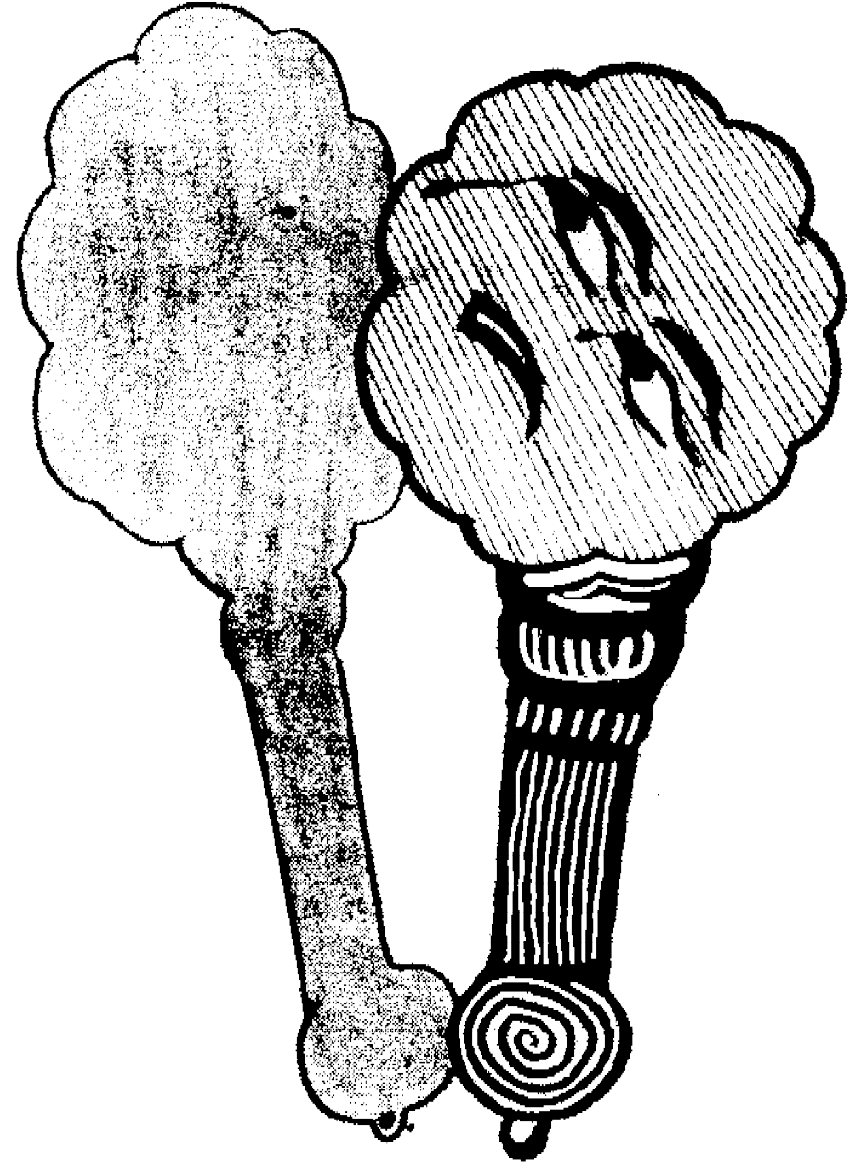
हवलदार धिनायक सिंह रेवती के सामने आया तो उसने इसकी तरफ देखा तक नहीं। न उसने अपने सिर का पल्लू ही कुछ आगे सरकाया। नर्स उसकी डिस्चार्ज स्लिप बनाने के लिए आई,

''नाम ?''

''रेवती देवी।''

''पति का नाम ?''

''...............''

''क्या नाम है तेरे खसम का ?''

''मेरा कोई खसम नहीं है।''

नर्स ने रेवती के बाप का नाम लिखा और दवाई की गोलियाँ कब कैसे खानी है, बताकर चली गई।

पास खड़े हवलदार पर सैंकड़ों गोलियाँ चल गईं। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह खुशी से उछले या गम में डूब मरे। उसने घबराते हुए रेवती को पेशी की अगली तारीख बतलाई। इस पर रेवती कठोरता से बोली,

''मैंने तुझे तलाक दे दिया है। तुझे अब जिसे लाना है लाओ। कचहरी की वह मनहूस शक्ल मुझे नहीं देखनी। ये दो साल मैंने टोकरियाँ बुनकर और सूत कातकर निकाले हैं। अब पूरी जिंदगी काट लूँगी।''

हवलदार को देखकर छुनकी को अपने झुनझुने की याद आई। वह अपनी माँ से झुनझुने के लिए जिद्द करने लगी। रेवती



ने उसे गोद में लिया और उसके सिर पर हाथ फेरती हुई बोली,

''जरा ठहर बेटी,......अब हम नया झुनझुना लेंगे।''

❒❒❒❒